Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

पंजाबी लोकगीतों का उद्भव, विकास एवं विशेषताएँ

TANU CHAUDHARY
Research Scholar, Department of Music and Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana

सारांश: *लोक शब्द का प्रयोग नया नही है। इस शब्द का प्रयोग 'ऋग्वेद से ही मिलने लग जाता है। 'अथर्ववेद' में इस शब्द का प्रयोग दो अर्थों दिव्य लोक व पार्थिव लोक में किया गया है। भरत मुनि के 'नाट्य शास्त्र' में लोक-धर्म-प्रवृत्ति का वर्णन मिलता है। मतंगमुनि द्वारा रचित 'बृहदेशी' में लोकानां नरेद्राणां का वर्णन देखने को मिलता है। राजा अशोक के शिलालेखों में सर्वलोकहिताए का प्रयोग लोक का विशिष्ट अर्थ इंगित करता है। इसके अतिरिक्त हिन्दी काव्य में सूरदास व तुलसी द्वारा लोक शब्द का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया गया है। ''लोक'' शब्द के कई अर्थ है जैसे उपनिषदों में दो लोक माने गए है इहलोक तथा परलोक। पुराणों में तीन लोकों का उल्लेख है - पृथ्वी लोक, अन्तरिक्ष लोक एवं ध्रुव लोक। पौराणिक काल में सात लोकों को वर्णित किया गया है - जैसे ''भू-लोक, सर्वलोक, तपलोक, सत्य लोक या ब्रह्मलोक आदि।'' लोक का दूसरा अर्थ ''जन सामान्य'' है। इस का हिन्दी रूपान्तर 'लोग है। आधुनिक काल में लोक शब्द का प्रयोग सभ्य राष्ट्र की समस्त जनता के लिए किया जाता है।*

कुंजी शब्द: *दिव्य लोक, पार्थिव लोक, नाट्य शास्त्र, शिलालेखों, जन सामान्य, पर्यायवाची।*

लोकगीत का अर्थ

लोकगीत लोक हृदय का राग है। जिसमें व्यक्तिगत नहीं बल्कि सम्पूर्ण समुदाय की भावनाएँ सम्मलित होती है। लोकगीतों में जन सामान्य की आशाएँ, अभिलाषाएँ, चाव, उमंग, दुःख, दर्द आदि विद्यमान होते है। लोकगीत किसी समाज विशेष की बहुमूल्य सम्पति होते है। लोक गीतों के अध्ययन से किसी समाज विशेष की अथवा किसी स्थान विशेष (देश या प्रान्त) की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इन्साईक्लोपिडिया ब्रिटेनिका के अनुसार ''लोकसंगीत जनसाधारण के स्वाभाविक उद्गार है। जो प्राचीन काल से हमारे जीवन में सिहरन करता चला आ रहा है। लोकगीतों की परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितना आदि मानव। यद्यपि मौखिक परम्परा में रहने के कारण इसका क्रमबद्ध रूप न रह सका। परन्तु फिर भी साहित्य एवं इतिहास के प्रत्येक युग तथा काल में लोकगीतों के अस्तित्व एवं स्वरूप के पर्याप्त चिन्ह विद्यमान है।''[1] स्टैण्डर्ड डिक्शनरी ऑफ फोकलोर के अनुसार - ''Folk Songs are best refined as songs which are (Conta) content in the reprertary of Folk group2 बोटकिन के अनुसार ''In a purely oral culture everything is folklore"3

लोक निहित लोगों का महत्व निम्न कथन से स्पष्ट होता है:- "By folk literature is ment the traditional literature of the unlettered mass living in one integrated social group. It is ordilly transmitted and can be claimed to be of the people, by the people for the people."[4]

लोक गीत दो प्रकार के होते हैं। एक मौखिक अर्थात जिसका लेखक नहीं होता और ये गीत एक युग से दुसरे युग में प्रवेश करते हैं। दुसरा वे लोक गीत जो लिखित रूप में उपलब्ध होते हैं। इन के बारे में Waterman ने लिखा है "Folklore is that art from comprising various types of stories, proverbs, sayings songs in cantations and other formulas which employ spoken language, its medium."[5]

कुंज बिहारी दास ने लोकगीतों के बारे में कहा है ''लोक गीत उन लोगों के जीवन की स्वत: स्फूर्त अभिव्यक्ति है जो अधिकतर आदिम अवस्था में रहते है।''[6]

लोक गीत की अवधारणा को हम इस प्रकार से स्पष्ट कर सकते हैं कि यह मानव मन की कल्पनाओं का साकार रूप है। इसकी अभिव्यक्ति में स्वर, ताल का समावेश होता है। लोक गीत के संदर्भ में कहा जा सकता है कि आरम्भ में तो यह किसी व्यक्ति विशेष की व्यक्तिगत रचना

हो तथा उसका सामान्यीकरण लोक समुदाय द्वारा किया गया हो उसे लोक गीत की संज्ञा दे सकते हैं। लोक गीत की रचना व्यक्तिगत न होकर जनसमुदाय द्वारा भी हो सकती है। लोक गीत जन-जन की भाषा में सांगीतिक अभिव्यक्ति होती है। लोकगीतों मे सामान्यतः आनन्द, उमंग, तरंग एवं अनोखी मस्ती का समावेश होता है। कुछ लोकगीत किसी दुखमय वातावरण में, विरह में, युद्ध लड़ाई तथा किसी तरह के मनुमुटाव में भी वाणी वेदना से प्रभावित लोकगीत के रूप में प्रतिध्वनित होते हैं। लोकगीत विभिन्न प्रदेशों में वहाँ की ग्रामीण बोलियों में दिखाई देते हैं।

अतः लोकगीत एक ऐसी रचना है जिसका सामान्यीकरण जन समुदाय की भाषा में व्यक्त होता है। उसे लोक प्रतिनिधित्व प्राप्त होता है एवं लोकगीत जन-जन की भाषा में सांगीतिक अभिव्यक्ति होती है। लोकगीत में जनमानस के सहज भावों की अभिव्यक्ति सहजता से देखने और सुनने को मिलती है।

पंजाबी लोकगीतों का उद्भव एवं विकास:-

पंजाब वह प्रदेश हैं जहाँ पांच नदियों का नीर रस प्रवाहित होता है। 1947 से पूर्व पंजाब प्रदेश की विस्तृत भुजाएँ पेशावर से लेकर दिल्ली तक एवं कशमीर से लेकर राजस्थान की सीमा तक फैली हुई थी। भारतीय पंजाब में से भी हरियाणा व हिमाचल अलग प्रदेशों का निर्माण हुआ। पंजाब प्रदेश के जीवन में एक अद्भुत मस्ती, सरलता, सरसता और सौन्दर्य प्रेम की धाराएं प्रवाहित होती है। यहाँ का जीवन जिस मस्ती में गाता व नाचता है, वह मस्ती शायद ही और कहीं देखने को मिले। पंजाब का निवासी क्षण प्रतिक्षण अपने परिश्रम से एवं अपने समर्पित भाव से अपने जीवन को दिशा देता है। वहाँ बसती है उल्लास की मस्ती, उमंग व आनन्द की धारा।

पंजाब की मुख्य धारा कृषि है। लेकिन तकनीकी, शैक्षणिक, औद्योगिक, सामाजिक व आध्यात्मिक क्षेत्रों में भी यहाँ के निवासियों का वर्चस्व रहा है। यहाँ के निवासियों ने देश के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपयोगिता सिद्ध की है। यहाँ के लोग हर संकटकालीन परिस्थिति का डट कर मुकाबला करते रहे हैं। भारत की इज्जत (मान) तथा शान का रक्षक होने के कारण पंजाब को ''भारत की शमशीर'' (भारत की खड्ग भुजा)[7] कहलवाने का गौरव प्राप्त है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने के कारण यहाँ लोक कलाओं, लोक नृत्यों, लोकगीतों के संवर्धन में सहायता मिलती है। पंजाब के लोगों के जीवन में सारे भारतवर्ष में अधिक ज्ञान और सम्पन्नता है। मोहिन्दर सिंह रंधावा के अनुसार ''दो दिनघट जीना, जीना मटक दे जाल''।[8] पंजाब के लोग गाते, नाचते, झूमते, जूझते और गीत गुनगुनाते हुए जीवन व्यतीत करने के अभ्यस्त होते हैं। यहाँ का जीवन लोरियों से लेकर अलाहुणियों तक अर्थात जन्म से लेकर मृत्यु तक सुर-ताल से बंधा होता है। एक प्रसिद्ध कहावत है - ''पंजाब दिया जम्मिया नू नित मुहिम्मा।''[9] अतः पंजाब की संस्कृति को गाती, नाचती एवं जूझती संस्कृति कहना प्रासंगिक है। यहां के निवासी अपने आप को पंजाबी होने का गर्व अनुभव करते हैं।

पंजाबी लोकगीतों के उद्भव (उत्पत्ति) एवं विकास के संदर्भ किसी ठोस निष्कर्ष पर पहुंचना बहुत कठिन है। श्री गुरुप्रताप सिंह गिल के अनुसार ''ऐसा लगता है कि लिपिबद्ध होने से पहले सदियों तक यह जंगली फूलों की तरह बिखरे रहे तथा अपनी महक खुद बिखेरते रहे और रीतियों के चक्करों, समय के चक्करों के साथ-साथ इन का रंग रूप भी बदलता गया।''[10] डॉ. अवतार सिंह दलेर पंजाबी लोकगीतों की प्राचीनता के बारे में कहते हैं ''हाँ'' ऐसा कहा जा सकता है कि जब मानव जातियों को एक जगह मिल-जुल कर बैठने की समझ हुई तो मानव हृदय में प्यार की कोपलें फूटने लगी। जवान दिलों में प्यार का वेग उमड़ने लगा तो सहज कला ने जन्म लिया और स्वयं को अभिव्यक्त करने की शक्ति पैदा होने लगी। जब चित्रकला तथा मूर्तिकला से ऊंचा उठकर अपने मन की अभिव्यक्ति के लिए मानव के अंदरूनी जज्बों ने कविता का रूप लिया तब साहित्य का आविर्भाव हुआ और इस तरह जो सबसे प्राचीन काव्य था और लोगों की कविता थी। उसी ने पंजाबी लोकगीतों का रूप धारण किया।''[11]

यह निश्चित करना कि पंजाबी लोकगीतों का रचना काल क्या है? इन का सृजन कब और कैसे हुआ? वास्तव में वे ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्न है जिनका उतर देना सहज नहीं। फिर भी उपरोक्त वर्णन के आधार पर हम कह सकते हैं कि ये उतने ही प्राचीन है जितना आदिमानव। ये गीत

जंगल के उस वृक्ष के सामान है, जिसकी जड़ अतीत की गहराई में दफन होती है। परन्तु फिर भी नए शाख, नए पात और नए फल निरन्तर देता रहता है। पंजाब लोक गीत पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते रहे और कालान्तर में समय की मांग अनुसार उसमें तरह-तरह के रंग भर कर नई अवस्था प्रदान की जाती रही। पंजाबी लोकगीत लोक रंग का अनोखा स्वरूप है।

पंजाबी लोकगीतों के उद्भव के सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि जन सामान्य के भावों का उद्रेक दी इन गीतों का उदगम स्थल है तथा इन का उद्गम वाणी के माध्यम से हुआ न कि लेखन या मुद्रण के माध्यम से हुआ। इनकी अभिव्यक्ति सहज और सरल मानव भावनाओं में है। पंजाबी लोकगीत पीढी दर पीढ़ी स्थानान्तरित होते रहे तथा नए लोगों द्वारा अपनी बुद्धि और कल्पना से मूल पाठ में अन्य छन्द भी जोड़-तोड़ दिए जाते रहे। अन्त में कहा जा सकता है कि पंजाबी लोकगीत वेदों की रचना के समान पंजाब निवासियों की सबसे प्राचीन कविता है।

पंजाबी लोकगीतों की विशेषताएँ:

पंजाब के लोक संगीत में लोकगीतों का भरपूर खजाना है। पंजाबी लोक गीत पंजाब निवासियों का ऐसा प्रतिबिम्ब है, जिनका हर शब्द, हर बोल, हर गीत उनकी पवित्र आत्मा को प्रवाह करता है। पंजाबी लोक गीतों में हम पंजाब के लोक जीवन की सब परिस्थितियों की झलक पाते हैं। पंजाब प्रदेश के पंजाबी लोक गीतों का अपना ही निराला ढंग है। पंजाबी लोकगीतों का भंडार बहुत ही बहुरंगा व अमीर है। पंजाबी लोकगीतों की विशेषताओं को इस प्रकार रेखांकित किया जा सकता है:-

पंजाबी लोकगीतों की विषय वस्तु अत्यन्त व्यापक है। पंजाबी जीवन इतना रंगीला है कि यहाँ बच्चा पैदा होने के 'होलर'से लेकर सारे जीवन को गीत गाता हुआ ही समाप्त करता है। अन्तकाल मरने के समय भयानक हृदय विदारक कष्ट को 'उल्लाहणियों' और 'वैण' में गाकर दुख-विष को लोकगीत के माध्यम से वमन किया जाता है। पंजाबी लोकगीतों में बच्चा पैदा होने के गीत, बालक को सुलाने के गीत (लोरियां), विवाह के गीत (धोडिया एवं सुहाग), सास-ननद के गीत, देवर-भाभी व भाभी जेठ के गीत, जीजा-साली, फसल काटने के गीत, त्यौहारों केगीत, मेलों के गीत, चरखा कातने के गीत, लोकनृत्य के गीत, पति बिछोड़े के गीत, रूठने-मनाने के गीत, बिलखती पीड़ा के गीत है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पंजाबी लोकगीतों में पंजाब के लोगों के जीवन का पूर्ण विवरण मिलता है। पंजाबी लोकगीत पंजाब के जन-जीवन पर आधारित है। पंजाब के लोकगीतों में यहां के लोगों के जीवन का सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन का पूर्ण विवरण मिलता है। पंजाबी लोकगीत पंजाब के जन-जीवन पर आधारित है। इनमें लोगों के जीवन का सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन का पूर्ण वर्णन मिलता है।पंजाबी लोकगीतों की विशेषता है कि इन की भाषा सरल तथा साधारण होने के कारण सहज ही मुँह पर चढ़ जाती है। पंजाबी लोकगीत होठों पर मिश्री की भाँति घुल जाते हैं। पंजाबी लोकगीत ऐसी मीठी स्वर लहरियां हैं जो मुरझाएं हृदय पुष्प को पुनः हरित करने की क्षमता रखती है। पंजाबी लोकगीत विशेषकर लोकबोलियां इतने जोश से भरपूर है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी संगीत लहरियों में खो कर थिरकने लगता है अर्थात उस का मन मयूर नाचने लगता है। पंजाबी लोकगीतों का भारतीय साहित्य में एक विशेष उच्च स्थान है व अलग पहचान है। पंजाबी लोकगीत आज भी अपने मूल रूप में सम्पूर्ण शोभा को छुपाए हुए हैं एवं बाहरी चमक दमक से सर्वथा रहित है।

पंजाबी लोक गीतों के रूप की दृष्टि से कई विधाएँ विद्यमान है जैसे लोरियां, घोड़िया, सुहाग, छन्द, सोहिले, सिठनियां, पहिरे, सतवार, बारामाह, सद, ढोला, माहिया, टप्पे, बोलियाँ, कोयल, हीर, काफी (मुल्तानी काफी, सिन्धी काफी), मिर्जा, अलाहुणियां, वैण आदि। पंजाब के लोक जीवन को यहाँ के लोक गीतों से अलग नहीं किया जा सकता। यहाँ हर परिस्थिति में लोकगीतों के विभिन्न रूपों के माध्यम से जीवन जुगरता है। पंजाबी लोकगीतों के वायुमण्डल में हँसी और अश्रु दोनों का मेल है। यहाँ कन्या की शादी में 'सुहाग' गाए जाते हैं। दूसरी तरफ लड़के के घर घोड़ी गाई जाती है।

पंजाबी लोकगीत अधिकांश रूप से भैरवी, पीलू, मधुमाद सारंग, पहाडी राग, तिलंग, राग आसावरी पर आधारित है। पंजाबी लोक गीतों में ताल का काम हाथ की ताली व चुटकी बजाकर किया जाता रहा है। पंजाबी लोक गीत श्रृंगार रस से ओत-प्रोत है। इसके अतिरिक्त वीर रस से परिपूर्ण वीर गाथाओं जैसे गुरु गोबिन्द सिंह जी की वार, खालसे की वार, चण्डी दी वार का भी गायन किया जाता है।

पंजाबी लोकगीतों को अलंकृत करने के लिए ढोल एक लोकप्रिय वाद्य है। लोकनृत्य 'भंगड़ा' व त्यौहारों के अवसर पर इसका प्रयोग होता है। इनके अतिरिक्त ढोलकी, घड़ा, चिमटा, खंजरी आदि का पंजाबी लोकगीतों में अपना एक विशेष स्थान रहा है। इन वाद्यों का प्रयोग ताल के लिए किया जाता हैं। पंजाबी, लोकगीतों में 'अलगोजे' का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। इसके साथ-साथ बाँसुरी और बीन भी पंजाब के लोकप्रिय वाद्य है। सारंगी, एकतारा, दो तारा, तूम्बा आदि वाद्यों की भी पंजाबी लोकगीतों में काफी महत्ता है। तूम्बी पंजाब के लोक गायकों का हरमन प्यारा वाद्य कहा जा सकता है।

पंजाबी लोकगीतों की एक विशेषता यह भी है कि इनमें स्त्री की कथा भरपूर मिलती है। पंजाब के अधिकतर लोकगीत स्त्रियों के बारे में ही है और स्त्रियों के मुख से ही गाए गये हैं। इन लोकगीतों में युवतियां किकली डालती है, चरखा कातती है, पींग पर झूलती है। पंजाबी लोकगीतों में सुकोमल नारी हृदय का निर्मल स्वच्छ दर्पण दिखाई देता है। इसके साथ-साथ पंजाबी लोकगीतों में पुरुषों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। ढोला और माहिया जैसे मधुर गीत पुरुषों द्वारा ही रचित है। पंजाबी लोकगीतों की विशेषता है कि इनमें सादगी, सच्चाई, दया, प्रेम, सरलता जैसे नैतिक मूल्य सर्वत्र मिलते हैं। हृदय के सच्चे उद्गार सहज स्वाभाविक रूप में प्रकट होते हैं।

निष्कर्ष

लोकगीतों का लोक जीवन के साथ चाँद और चांदनी जैसा अभिन्न सम्बन्ध है। प्रसिद्ध नर्तक उदय शंकर जी के अनुसार ''लोक जीवन का हर पक्ष संगीत से परिपूर्ण है। इसलिए प्रत्येक प्राणी मुझे संगीतकार दिखाई देता है।[12] पंजाबी लोकगीतों के संदर्भ में यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि पंजाबी लोकगीतों की परम्परा विश्व की लोक परम्पराओं में विशेष स्थान रखती है। पंजाबी लोकगीतों का भंडार बहुत ही बहुरंगा और अमीर है। पंजाब प्रदेश के सभी लोगों का यह परम कर्त्तव्य बनता है कि लोकगीतों की अमूल्य सम्पदा का सम्मान करें तथा इनके मूल रूप को सुरक्षित रखे।

सन्दर्भ

1. इन्साईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, पृ. 443
2. ''स्टैण्डर्ड डिक्शनरी ऑफ फोकलोर'', पृ.सं. 1034
3. लोक साहित्य की भूमिका, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
4. The Cultural Heritage of India, Vol. 5, Essay by a Bhattacharya. P. 677
5. Funk of Wagnalls standard Dictionary of Folklore : mythology and Legand Vol. 1, Under Sig. R.A. Waterman. P. 403
6. कुंज बिहारी दास ए-स्टडी ऑफ ओरिस फोकलोर पटना, पृ.सं. 1950
7. बेदी सोहिन्द सिंह (डा. बनजारा बेदी) पंजाब की लोकधारा, पृ. 2
8. रंधावा मोहिन्दर सिंह एण्ड सत्यार्थी : पंजाबी लोकगीत, पृ. 17
9. महिला संगीत अंक 1-2, जनवरी-फरवरी, पृ. 175
10. श्री गुरुप्रताप सिंह गिल, ''पंजाब दीयां लोक धुनां'' पृ. 2
11. अवतार सिंह दलेर - पंजाबी लोकगीत वनतर ते विकास, पृ. 19
12. मदान, पन्ना लाल, पंजाब विच संगीत कला दा निकास अते विकास, पृ. 42